

## क. पौलुस की बुलाहट

- ❖ यीशु द्वारा चुने गए बारह प्रेरितों के अतिरिक्त, बाइबल अन्य प्रेरितों का भी उल्लेख करती है, जैसे मत्तियाह (प्रेरितों के काम 1:26), बरनबास (प्रेरितों के काम 14:4), याकूब और पौलुस (1 कुरिन्थियों 15:7-9)।
  - पौलुस प्रेरित कैसे बना? यीशु द्वारा चुने जाने से (गलातियों 1:1)
  - वह कब चुना गया था? अपनी माता के गर्भ से ही (गलातियों 1:15)
  - उसे कब बुलाया गया? दमिश्क के मार्ग पर (प्रेरितों के काम 22:6-7)
  - वह किसका प्रेरित था? अन्यजातियों के लिए (गलातियों 2:9)
- ❖ अपनी बुलाहट के क्षण से ही पौलुस का जीवन यीशु पर केन्द्रित था। वह यीशु के विषय में सोचता था, यीशु के विषय में बोलता था, और हर किसी के साथ यीशु को साझा करता था।

## ख. कुरिन्थुस की यात्रा

- ❖ अपनी दूसरी प्रचार यात्रा के दौरान, पौलुस पवित्र आत्मा द्वारा यूरोप जाने के लिए प्रेरित किया गया (प्रेरितों के काम 16:6-10)। वहाँ उसे फिलिप्पी से निकाल दिया गया (प्रेरितों के काम 16:12, 38-39), थिस्सलुनीके से भी निकाल दिया गया (प्रेरितों के काम 17:1, 5, 9-10), और बेरिया से भी (प्रेरितों के काम 17:13-14)।
- ❖ एथेंस में, आराधनालय में यहूदियों और बाज़ार में अन्यजातियों को प्रचार करने के बाद, उसे अरियुपगुस में उपदेश देने के लिए बुलाया गया (प्रेरितों के काम 17:16-21)। उसके प्रभावशाली भाषण के बाद, केवल कुछ ही लोगों ने यीशु को स्वीकार किया (प्रेरितों के काम 17:34)।
- ❖ एथेंस छोड़कर, पौलुस कुरिन्थुस गया और अक्विला तथा प्रिस्किल्ला के साथ रहने लगा, जिनके साथ वह तम्बू बनाने का काम करता था (प्रेरितों के काम 18:1-3)।
- ❖ जैसा कि उसकी रीति थी, उसने पहले आराधनालय में यहूदियों को प्रचार करना आरम्भ किया और फिर अन्यजातियों को (प्रेरितों के काम 18:4-8)। कुरिन्थुस में अपने प्रवास के दौरान, और एथेंस की "निराशा" के बाद, पौलुस ने निश्चय किया कि वह मानवीय बुद्धि का सहारा नहीं लेगा, बल्कि केवल "यीशु मसीह, और वह भी क्रूस पर चढ़ाया हुआ" का प्रचार करेगा (1 कुरिन्थियों 2:2)।

## ग. कुरिन्थुस का नगर

- ❖ 146 ईसा पूर्व में रोम ने कुरिन्थुस को नष्ट कर दिया था। बाद में, 46 ईसा पूर्व में, जूलियस कैसर ने वहाँ पूर्व सैनिकों और स्वतंत्र लोगों की एक बस्ती बसाई। अंततः, 44 ईसा पूर्व तक नगर पूरी तरह से पुनर्स्थापित हो गया। जब पौलुस वहाँ पहुँचा, तब तक वह एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र बन चुका था।
- ❖ कुरिन्थुस का महत्व उसके स्थान के कारण था। वह कुरिन्थुस के संकरे भूभाग (इस्थमुस) पर स्थित था और दो महत्वपूर्ण व्यापारिक बन्दरगाहों से जुड़ा हुआ था: लखायुम, जो कुरिन्थुस की खाड़ी पर था; और केन्थ्रिया, जो सारोनिक खाड़ी पर था।
- ❖ व्यापारिक गतिविधियों के कारण पौलुस को तम्बू बनाने का कार्य करने का अवसर मिला। परन्तु कुरिन्थुस की समृद्धि (जो एथेंस की समृद्धि की टक्कर की थी) के साथ कई समस्याएँ भी थीं।
- ❖ मूर्तिपूजा और यौन अनैतिकता नगर में व्याप्त थीं और उसकी संस्कृति में गहराई तक समाई हुई थीं। कुरिन्थियों के लिए पौलुस के संदेश का बड़ा भाग इन समस्याओं को दूर करने के लिए था, जो धीरे-धीरे कलीसिया में भी प्रवेश कर रही थीं।

## घ. कुरिन्थुस के विश्वासी

- ❖ कुरिन्थुस के यहूदियों ने संदेश को अस्वीकार कर दिया, जिसके कारण पौलुस को आराधनालय छोड़ना पड़ा और वह अन्यजातियों के साथ आराधनालय के पास स्थित एक घर में सभाएँ करने लगा (प्रेरितों के काम 18:4-7)।
- ❖ "अन्यजातियों के बीच जो भ्रष्टा उसने देखी, और यहूदियों से जो तिरस्कार और अपमान उसे सहना पड़ा, उससे उसका मन अत्यन्त व्यथित हो गया। उसे संदेह होने लगा कि जिन लोगों के बीच वह कार्य कर रहा था, उनसे एक कलीसिया स्थापित करने का प्रयास करना बुद्धिमानी है या नहीं।" (ई. जी. व्हाइट, प्रेरितों के काम, पृष्ठ 250)
- ❖ उसी समय, यीशु ने रात के एक दर्शन में पौलुस को प्रोत्साहित करने के लिए दर्शन दिया कि वह कुरिन्थियों के बीच अपना कार्य जारी रखे, और उसे आश्वासन दिया कि वहाँ बहुत से लोग हैं जो संदेश को ग्रहण करेंगे (प्रेरितों के काम 18:9-10)।
- ❖ इस दर्शन से सशक्त होकर, पौलुस डेढ़ वर्ष तक कुरिन्थुस में रहा (प्रेरितों के काम 18:11)। अन्त में, यहूदी पौलुस को न्यायालय में ले गए (प्रेरितों के काम 18:12-13)। जब तक वह कुरिन्थुस से रवाना हुआ, तब तक वहाँ एक बड़ी कलीसिया स्थापित हो चुकी थी (प्रेरितों के काम 18:18)।

## ङ. कुरिन्थियों के नाम पत्रियाँ

- ❖ 1 कुरिन्थियों 1-6
  - खलोए से कलीसिया में विद्यमान कई समस्याओं के विषय में जानकारी प्राप्त करने के बाद, पौलुस ने उन्हें इन बातों के विषय में चेतावनी दी: गुटबन्दी; यौन अनैतिकता; मुकद्दमेबाजी; और वेश्यागमन।
- ❖ 1 कुरिन्थियों 7-16
  - खलोए के परिवार के लोग उसके पास कलीसिया की ओर से एक पत्र भी लाए थे, जिसमें कई प्रश्न पूछे गए थे। पौलुस ने उनके उत्तर देते हुए इन विषयों पर शिक्षा दी: विवाह; तलाक; अविवाहित रहना; मूरतों को चढ़ाए गए भोजन; आराधना में आचरण; आत्मिक वरदानों का उपयोग; और पुनरुत्थान।
- ❖ 2 कुरिन्थियों
  - यह दूसरी पत्री है जो सुरक्षित रखी गई है, यद्यपि पौलुस ने और भी कई पत्रियाँ लिखी थीं (संभवतः इन दोनों सुरक्षित पत्रियों से पहले और/या इनके बीच के समय में)। वह कुरिन्थियों की प्रशंसा करता है कि उन्होंने कुछ समस्याओं का समाधान जिस प्रकार किया, वह अच्छा था; परन्तु वह उन्हें यह भी प्रोत्साहित करता है कि वे अपने आसपास की संस्कृति के प्रभाव से बचते हुए संसार को सुसमाचार की दृष्टि से देखें।